Volume - 7 (2026)
Special Issue - 1 (January)
RESEARCH HUB
International Peer-Reviewed Multidisciplinary E-Journal
ISSN 2582-9173
Website : www.researchhub.org.in/research-hub !! Email : researchhubjournal@gmail.com

संगीत में मीडिया की भूमिका

डॉ. नवीन आनंदराव खांडेकर
सेवादल महिला महाविद्यालय सक्करदरा चौक,
नागपुर
Email - khandekarnavin@gmail.com

Crossref DOI - https://doi.org/10.63665/rh.v7i1.70

सारांश :

संगीत मानव जीवन का एक अभिन्न हिस्सा है। यह केवल मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि भावनाओं, विचारों, संस्कृति और समाज को जोड़ने का माध्यम भी है। समय के साथ संगीत की प्रस्तुति, प्रचार और प्रसार के तरीकों में व्यापक परिवर्तन आया है, और इन परिवर्तनों के केंद्र में है—मीडिया। आज मीडिया न केवल संगीत के निर्माण और उपभोग की प्रक्रिया को प्रभावित कर रहा है, बल्कि यह संगीत उद्योग के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आयामों को भी नए रूप में प्रस्तुत कर रहा है।

मीडिया की भूमिका को समझने के लिए हमें इसके विभिन्न रूपों—जैसे प्रिंट मीडिया, रेडियो, टेलीविजन, फिल्में, डिजिटल मीडिया, सोशल मीडिया, स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म आदि—की कार्यप्रणाली को समझना आवश्यक है। इस लेख में हम विस्तार से यह विश्लेषण करेंगे कि संगीत को लोकप्रिय बनाने, कलाकारों की पहचान स्थापित करने, उद्योग के विकास और समाज में सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा देने में मीडिया की क्या भूमिका है।

शब्दावली : मीडिया की भूमिका, प्रिंट मीडिया, संगीत प्रसार, मल्टीमीडिया प्रचार, विज्ञापन और स्पॉन्सरशिप, AI आधारित संगीत, भाषा और पहचान

परिचय :

मीडिया का अर्थ है वह माध्यम जिसके द्वारा सूचना, विचार और भावनाएँ जनसाधारण तक पहुँचाई जाती हैं। संगीत के संदर्भ में मीडिया वह साधन है, जिसके द्वारा संगीत रचनाएँ, कलाकारों की प्रस्तुतियाँ और संगीत से जुड़ी जानकारियाँ व्यापक श्रोताओं तक पहुँचती हैं। पारंपरिक मीडिया जैसे रेडियो और दूरदर्शन के साथ-साथ डिजिटल मीडिया ने संगीत की दुनिया में क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं।

मीडिया ने संगीत को सीमाओं से मुक्त कर दिया है। रेडियो के आगमन से ही संगीत घर-घर तक पहुँचने लगा था। शास्त्रीय, लोक, सुगम और फिल्म संगीत—सभी को रेडियो ने लोकप्रिय बनाने में योगदान दिया। टेलीविजन ने दृश्य और श्रव्य दोनों माध्यमों को जोड़कर संगीत कार्यक्रमों, रियलिटी शोज़ और लाइव कॉन्सर्ट्स को दर्शकों तक पहुँचाया। आज कोई भी नया गीत या एल्बम मीडिया के माध्यम से ही लोकप्रियता प्राप्त करता है।

डिजिटल मीडिया और इंटरनेट ने इस भूमिका को और भी सशक्त बना दिया है। यूट्यूब, स्पॉटिफ़ाई, सावन, एप्पल म्यूज़िक जैसे प्लेटफॉर्म्स ने कलाकारों को सीधे श्रोताओं से जोड़ दिया है। अब किसी कलाकार को पहचान पाने के लिए बड़े रिकॉर्ड लेबल पर निर्भर नहीं रहना पड़ता।

मीडिया ने उभरते कलाकारों को मंच प्रदान किया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम और एक्स (ट्विटर) के माध्यम से कलाकार अपनी रचनाएँ साझा कर सकते हैं और श्रोताओं से सीधा संवाद स्थापित कर सकते हैं। रियलिटी शो ने अनेक प्रतिभाशाली गायकों और संगीतकारों को पहचान दिलाई है। इस प्रकार मीडिया कलाकारों के करियर निर्माण में सहायक सिद्ध हुआ है।

मीडिया संगीत शिक्षा का भी एक महत्वपूर्ण साधन बन चुका है। ऑनलाइन कक्षाएँ, वीडियो ट्यूटोरियल्स और वेबिनार के माध्यम से अब संगीत सीखना पहले की तुलना में कहीं अधिक सुलभ हो गया है। शास्त्रीय संगीत, जो कभी सीमित वर्ग तक ही सीमित था, आज डिजिटल माध्यमों के कारण विश्वभर में सीखा और समझा जा रहा है।

इसके अतिरिक्त, मीडिया ने दुर्लभ और प्राचीन संगीत रचनाओं के संरक्षण में भी योगदान दिया है। रिकॉर्डिंग, ऑडियो-वीडियो संग्रह और डिजिटल आर्काइव्स के माध्यम से संगीत धरोहर को सुरक्षित रखा जा रहा है।

मीडिया ने विभिन्न संस्कृतियों के संगीत को एक-दूसरे के निकट लाने का कार्य किया है। आज भारतीय संगीत विश्व मंच पर सुना और सराहा जा रहा है, वहीं विदेशी संगीत भी भारत में लोकप्रिय है। यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान मीडिया के बिना संभव नहीं था। फ्यूज़न म्यूज़िक इसका श्रेष्ठ उदाहरण है, जिसमें विभिन्न संगीत शैलियों का समन्वय देखने को मिलता है।

मीडिया ने संगीत को एक सशक्त उद्योग का रूप दिया है। एल्बम रिलीज़, म्यूज़िक वीडियो, लाइव कॉन्सर्ट्स और ब्रांड एंडोर्समेंट—ये सभी मीडिया के माध्यम से ही संभव होते हैं। इससे कलाकारों, तकनीशियनों और संगीत से जुड़े अन्य लोगों को रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं। डिजिटल स्ट्रीमिंग से होने वाली आय ने संगीत उद्योग की आर्थिक संरचना को नई दिशा दी है।

जहाँ मीडिया के अनेक लाभ हैं, वहीं कुछ नकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिलते हैं। व्यावसायिकता के कारण कभी-कभी संगीत की गुणवत्ता पर प्रभाव पड़ता है। लोकप्रियता की दौड़ में सार्थक और गंभीर संगीत पीछे छूट जाता है। इसके अतिरिक्त, कॉपीराइट उल्लंघन और पायरेसी जैसी समस्याएँ भी मीडिया के साथ जुड़ी हुई हैं।

1. संगीत और मीडिया का ऐतिहासिक संबंध :

संगीत और मीडिया का संबंध नया नहीं है। जब छापखाने का विकास हुआ, तब प्रिंट मीडिया ने गीतों के बोल और संगीत की जानकारी जन–जन तक पहुंचाई। समय के साथ ग्रामोफ़ोन, रेडियो और टेलीविजन ने इस संबंध को और गहरा कर दिया।

- ग्रामोफ़ोन (Phonograph) के आविष्कार ने पहली बार संगीत को रिकॉर्ड करके लोगों तक पहुँचाने का मार्ग खोला।
- रेडियो ने संगीत को घर–घर पहुंचाकर कलाकारों को नई पहचान दी।
- फ़िल्मों ने संगीत को लोकप्रिय बनाने में अभूतपूर्व योगदान दिया, विशेषकर भारतीय सिनेमा में जहाँ गीत–संगीत फ़िल्मों का मुख्य तत्व रहा।
- टेलीविज़न ने संगीत–आधारित शो और प्रतियोगिताओं के माध्यम से नए कलाकारों को मंच दिया।
- डिजिटल और इंटरनेट मीडिया ने संगीत उद्योग को पूरी तरह परिवर्तित कर दिया, जिससे कलाकार और दर्शक सीधा संपर्क स्थापित कर सके।

इस ऐतिहासिक यात्रा ने संगीत के प्रसार को तेज़, व्यापक और वैश्विक बना दिया।

2. प्रिंट मीडिया की भूमिका :

प्रिंट मीडिया जैसे अख़बार, पत्रिकाएँ, संगीत जर्नल और पुस्तकें लंबे समय तक संगीत और कलाकारों के बारे में जानकारी का मुख्य स्रोत रहे।

(i) संगीत आलोचना और समीक्षा :

पत्रिकाओं में छपने वाली संगीत समीक्षाएँ कलाकारों की पहचान और उनके काम की लोकप्रियता बढ़ाने में महत्वपूर्ण रही हैं। समीक्षकों की राय से श्रोताओं की धारणा बनती है और संगीत की गुणवत्ता का मूल्यांकन भी होता है।

(ii) कलाकारों के इंटरव्यू :

प्रिंट मीडिया ने कलाकारों के जीवन, संघर्ष और उपलब्धियों को आम जनता तक पहुँचाया। इससे कलाकारों की छवि बनी और लोग उनसे जुड़ाव महसूस करने लगे।

(iii) सांस्कृतिक दस्तावेज़ीकरण :

कई पत्रिकाएँ और जर्नल भारतीय संगीत की विविध शैलियों—शास्त्रीय, लोक, सूफी, आधुनिक—का रिकॉर्ड तैयार करते रहे हैं, जो शोधकर्ताओं और संगीत छात्रों के लिए महत्वपूर्ण सामग्री बन गए।

हालाँकि डिजिटल युग में प्रिंट मीडिया की भूमिका थोड़ी सीमित हुई है, फिर भी यह संगीत के दस्तावेज़ीकरण और गंभीर विश्लेषण का एक विश्वसनीय माध्यम है।

3. रेडियो: संगीत प्रसार का आधार :

रेडियो ने संगीत को सर्वसुलभ बनाया। भारत जैसे देश में जहाँ हर वर्ग तक तकनीक की पहुँच नहीं थी, वहाँ रेडियो ने संगीत संस्कृति को पल्लवित किया।

(i) हर घर में संगीत :

रेडियो ने संगीत को मनोरंजन के प्रमुख साधन के रूप में स्थापित किया। लोग बिना किसी अतिरिक्त खर्च के संगीत सुन सकते थे।

(ii) नए कलाकारों को मंच :

ऑल इंडिया रेडियो जैसी संस्थाओं ने अनेक गायकों, वादकों और संगीत निर्देशकों को पहली पहचान दी। अनेक महान कलाकार रेडियो से ही प्रसिद्ध हुए।

(iii) विविधता का प्रसार :

रेडियो ने लोक संगीत, शास्त्रीय संगीत और क्षेत्रीय गीतों को प्रसारित करके सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा दिया। डिजिटल युग में रेडियो एफएम, इंटरनेट रेडियो और पॉडकास्ट के रूप में विकसित हो चुका है, जिससे इसकी पहुँच पहले से दोगुनी हो गई है।

4. टेलीविज़न और संगीत का विकास :

टेलीविज़न ने संगीत को दृश्य अनुभव में बदल दिया। इससे संगीत कार्यक्रम अधिक रोचक और प्रभावशाली बन गए।

(i) संगीत–आधारित प्रतियोगिताएँ :

इंडियन आइडल, सा रे गा मा पा, द वॉइस जैसी टीवी प्रतियोगिताओं ने नए कलाकारों को राष्ट्रीय पहचान दिलाई।

(ii) संगीत चैनलों का उदय :

एमटीवी, चैनल V जैसे चैनलों ने युवाओं में संगीत संस्कृति को नया रूप दिया। म्यूज़िक वीडियो एक नई कला बनकर सामने आए।

(iii) विज्ञापन और संगीत :

टीवी विज्ञापनों में संगीत का उपयोग ब्रांड प्रचार में मददगार साबित हुआ। इससे संगीतकारों के लिए नए रोजगार के अवसर भी बने। टेलीविज़न की दृश्यात्मक शक्ति ने संगीत के भाव, अभिव्यक्ति और शैली को और अधिक जीवंत बना दिया।

5. फिल्म उद्योग में संगीत और मीडिया :

भारतीय फ़िल्म उद्योग में संगीत की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। मीडिया ने फ़िल्म संगीत को बड़े पैमाने पर लोकप्रिय बनाने में विशेष योगदान किया है।

(i) फिल्मी गीतों का प्रसार :

मीडिया प्लेटफॉर्म ने फिल्मी गीतों को देश–दुनिया तक पहुँचाया, जिससे भारतीय संगीत की वैश्विक छवि बनी।

(ii) मल्टीमीडिया प्रचार :

गीतों के लॉन्च, ट्रेलर, प्रमोशनल वीडियो आदि के जरिए फिल्मों का प्रचार आसान हो गया।

(iii) संगीत के व्यावसायिक अवसर :

फिल्म संगीत बिक्री, रिंगटोन, टेलीविज़न अधिकार, डिजिटल स्ट्रीमिंग आदि से बड़ा बाज़ार बन चुका है, जिसमें मीडिया की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है।

6. डिजिटल और सोशल मीडिया की क्रांति :

21वीं सदी में इंटरनेट ने संगीत उद्योग में क्रांतिकारी बदलाव लाए हैं। डिजिटल मीडिया ने संगीत के निर्माण, वितरण और खपत के तरीकों को पूरी तरह बदल दिया है।

(i) स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म्स :

Spotify, YouTube, Gaana, JioSaavn जैसे प्लेटफॉर्म ने संगीत को ऑन–डिमांड उपलब्ध कराया।

(ii) सोशल मीडिया पर कलाकारों की पहचान :

Instagram, Facebook, TikTok, YouTube जैसे प्लेटफॉर्म ने स्वतंत्र कलाकारों को भी स्टार बना दिया है।

(iii) वायरल संगीत की अवधारणा :

कोई भी गीत सोशल मीडिया पर ट्रेंड होकर लाखों लोगों तक पहुँच सकता है। यह पारंपरिक मीडिया की सीमाओं को तोड़ता है।

(iv) रीमिक्स और रीक्रिएशन संस्कृति :

डिजिटल मीडिया ने पुराने गीतों को नए अंदाज़ में पेश करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया।

(v) दर्शकों की सहभागिता :

लोग अब कलाकारों से सीधे जुड़ सकते हैं, प्रतिक्रिया दे सकते हैं और संगीत निर्माण को प्रभावित कर सकते हैं।

7. संगीत उद्योग में मीडिया के आर्थिक आयाम :

मीडिया ने संगीत उद्योग को एक विशाल आर्थिक क्षेत्र में बदल दिया है।

(i) विज्ञापन और स्पॉन्सरशिप :

मीडिया चैनल संगीत कार्यक्रमों को स्पॉन्सरशिप के माध्यम से आर्थिक रूप से सशक्त बनाते हैं।

(ii) डिजिटल रॉयल्टी :

स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म कलाकारों को डिजिटल प्ले के आधार पर रॉयल्टी प्रदान करते हैं।

(iii) लाइव स्ट्रीमिंग और टिकटेड इवेंट्स :

मीडिया के कारण कलाकार अब वर्चुअल कॉन्सर्ट कर सकते हैं, जिससे उनकी आय बढ़ती है। मीडिया की वजह से संगीत अब केवल कला नहीं, बल्कि एक लाभकारी उद्योग बन चुका है।

8. संगीत में मीडिया के सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव :

(i) सांस्कृतिक विविधता का आदान–प्रदान :

मीडिया ने अलग–अलग क्षेत्रों की संगीत शैलियाँ एक–दूसरे तक पहुँचाई, जिससे सांस्कृतिक एकता बढ़ी।

(ii) युवा पीढ़ी पर प्रभाव :

सोशल मीडिया और डिजिटल म्यूज़िक ने युवाओं की पसंद और जीवनशैली को प्रभावित किया है।

(iii) भाषा और पहचान :

मीडिया ने कई क्षेत्रीय भाषाओं के संगीत को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई है, जैसे पंजाबी पॉप, भोजपुरी गीत, मराठी और कन्नड़ संगीत आदि।

(iv) संगीत का वैश्वीकरण :

भारतीय संगीत अब विदेशों में भी लोकप्रिय है। बॉलीवुड गीत, इंडी म्यूज़िक और स्ट्रीट म्यूज़िक वैश्विक स्तर पर सुने जा रहे हैं।

9. मीडिया और संगीत की चुनौतियाँ :

हालाँकि मीडिया की भूमिका सकारात्मक है, लेकिन कुछ चुनौतियाँ भी सामने आती हैं:

(i) व्यावसायीकरण :

लोकप्रियता की दौड़ में अक्सर गुणवत्ता प्रभावित होती है। कई बार अच्छी कला को कम महत्व मिलता है।

(ii) piracy (पायरेसी) :

डिजिटल मीडिया ने पायरेसी की समस्या को बढ़ाया है, जिससे कलाकारों को नुकसान होता है।

(iii) गलत सूचनाएँ और विवाद :

सोशल मीडिया अफवाहों और फेक न्यूज़ का माध्यम भी बन जाता है, जिससे कलाकारों की छवि प्रभावित हो सकती है।

(iv) एल्गोरिदम का प्रभाव :

डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म का एल्गोरिदम तय करता है कि कौन–सा संगीत लोगों तक पहुँचेगा, जिससे कई प्रतिभाएँ पीछे रह जाती हैं।

10. संगीत और मीडिया का भविष्य :

आने वाले समय में मीडिया और संगीत का संबंध और भी गहरा होगा।

(i) AI आधारित संगीत :

कृत्रिम बुद्धिमत्ता संगीत निर्माण और संपादन में नए आयाम खोलेगी।

(ii) वर्चुअल रियलिटी कॉन्सर्ट्स :

Metaverse और VR तकनीक लाइव संगीत के अनुभव को पूरी तरह बदल देगी।

(iii) वैश्विक सहयोग :

डिजिटल मीडिया के माध्यम से दुनिया भर के कलाकार मिलकर नए संगीत प्रयोग कर सकेंगे।

(iv) स्वतंत्र कलाकारों का उदय :

मीडिया उन्हें बिना किसी रिकॉर्ड लेबल के दुनिया तक पहुँचने का अवसर देगा।

निष्कर्ष :

संगीत मानव जीवन का अभिन्न अंग है। यह न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि भावनाओं की अभिव्यक्ति, सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक संवाद का भी सशक्त माध्यम है। प्राचीन काल में संगीत गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से सीमित दायरे में प्रसारित होता था, किंतु आधुनिक युग में मीडिया ने संगीत को वैश्विक

मंच प्रदान किया है। आज मीडिया के बिना संगीत की व्यापक कल्पना अधूरी प्रतीत होती है। विभिन्न प्रकार के मीडिया—रेडियो, टेलीविजन, प्रिंट मीडिया, इंटरनेट और सोशल मीडिया—ने संगीत के प्रचार, संरक्षण और विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

संगीत और मीडिया का संबंध आज के युग में अत्यंत महत्वपूर्ण है। मीडिया ने न केवल संगीत के स्वरूप को बदला है, बल्कि इसे नई गति, नई पहुँच और नया उद्देश्य दिया है। आज संगीत केवल सुनने की वस्तु नहीं, बल्कि देखने, साझा करने, महसूस करने और अनुभव करने की कला बन चुका है।

मीडिया ने संगीत को वैश्विक संस्कृति का हिस्सा बना दिया है और कलाकारों को अभूतपूर्व स्वतंत्रता और अवसर प्रदान किए हैं। हालांकि चुनौतियां भी मौजूद हैं, लेकिन तकनीक और मीडिया के सहयोग से संगीत का भविष्य और अधिक नवोन्मेषी, समावेशी और उन्नत होने वाला है।

इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि संगीत के प्रचार–प्रसार, निर्माण, उपभोग और सांस्कृतिक महत्व को बढ़ाने में मीडिया की भूमिका केंद्रीय और अत्यंत प्रभावशाली है

संदर्भ ग्रंथसूची :

- अनीता गौतम " भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग " प्रथम संस्करण (2002) कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स ए अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली ISBN- 978-81-7391-500-8
- डॉ शुचि स्मिता " आकाशवाणी एव हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत" प्रथम संस्करण (2006) कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, ए.अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली ISBN- 81-7391-836-8
- डॉ. पूर्णिमा धुमाले "अभिजात संगीत" प्रकीर्ण चिंतन प्रथम संस्करण (2016) मिडिया इमेजेस 401 ए, विंग, लोकमान्य तिलक भवन, 568/